

# फाइटर जैट का डिज़ाइन बनाना

बचपन में, रामेश्वरम में, मैं और मेरे दोस्त विद्यालय से पैदल घर वापस आया करते थे। हम रोज़ गांव के तालाब के किनारे कुछ देर रुकते। मेरे दोस्त तालाब की लहराती सतह पर कंकड़ फेंकने का अभ्यास करते और मैं बैठा सारसों और समुद्री-पक्षियों को आकाश में उड़ान भरते देखता। उनकी उड़ान देखते हुए मैं भविष्य के सपनों में खो जाता था।

जैसे-जैसे मैं बड़ा हुआ, मुझे अपना लक्ष्य स्पष्ट दिखाई देने लगा। मेरी समझ में आ गया था कि अपने सपने सच करने के लिए मुझे इंजीनियरिंग की पढ़ाई करनी होगी।

मद्रास इंस्टिट्यूट ऑफ़ टैक्नॉलॉजी तकनीकी अध्ययन के लिए दक्षिण भारत में सबसे अच्छा संस्थान था। मैंने बड़ी मेहनत से पढ़ाई करके स्कोलरशिप हासिल की, ताकि मैं इस संस्थान में पढ़ सकूँ। उस दिन मुझे अपना लक्ष्य और भी साफ़ दिखाई देने लगा जब मैंने एमआईटी में कदम रखा। एमआईटी के परिसर में दो बड़े विमान प्रदर्शन के लिए रखे गए थे।

मुझे अच्छी तरह याद है कि बाकी छात्रों के छात्रवास में चले जाने के काफ़ी देर बाद तक भी मैं विमानों के पास बैठा रहता था। इनके निर्माण और डिज़ाइन ने मेरा मन मोह लिया था और मेरे मन में भी किसी दिन ऐसा ही विमान बनाने का सपना जागने लगा था।

इंजीनियरिंग की पढ़ाई के दौरान आखिरी प्रॉजेक्ट के लिए मुझे कक्षा के चार और साथियों के साथ मिल कर एक फ़ाइटर जैट विमान डिज़ाइन करने को कहा गया। हम ने काम आपस में बांट लिया।

एक दिन मेरे काम की प्रगति की जानकारी लेने के बाद हमारे अध्यापक ने मुझ से कहा, “अब्दुल, मैं तुम्हारी कार्य-योजना से सचमुच निराश हुआ हूँ, मैंने तुम से कहीं बेहतर काम की अपेक्षा की थी।”



BookBox

[www.bookbox.com](http://www.bookbox.com)

© BookBox. All Rights Reserved.

मैंने उन्हें कई कारण बताए लेकिन उन्होंने मेरी एक न सुनी। आखिर मैंने विनती की, “सर, मुझे एक महीने का समय दीजिए, मुझे विश्वास है कि मैं बेहतर डिज़ाइन बना लूंगा।”

उन्होंने मुझ पर नजर डाली और बोले, “देखो नौजवान, मैं तुम्हें तीन दिन दे रहा हूँ। अगर सोमवार की सुबह तुमने मुझे इस से बेहतर डिज़ाइन न दिखाया तो शायद तुम्हें अपनी स्कोलारशिप से हाथ धोना पड़ेगा।”

मैं स्तब्ध रह गया। मेरा भविष्य, मेरे सपने, स्कोलारशिप पर टिके थे, उसके बिना मैं कुछ नहीं कर पाता। मेरे पास डटकर काम करने के अलावा कोई चारा नहीं था। उस रात मैंने पलक तक नहीं झपकायी। अगली सुबह बस घंटेभर आराम किया, जरा सा कुछ मुंह में डाला और फिर काम में जुट गया।

रविवार की सुबह मैं काम खत्म कर ही रहा था कि अचानक मुझे लगा जैसे मेरे पीछे कोई खड़ा है। मुड़ कर देखा तो पाया मेरे अध्यापक मेरी ड्राइंग को बड़े ध्यान से देख रहे थे।

मेरे काम को अच्छी तरह जांचने के बाद उन्होंने मेरी पीठ थपथपाई और बोले, “मैं जानता था कि काम पूरा करने के लिए बहुत कम समय दे कर मैंने तुम पर दबाव डाला, लेकिन मैंने कभी उम्मीद नहीं की थी कि तुम इतना बढ़िया काम कर दिखाओगे!”

अध्यापकजी की बात सुन कर मुझे इतनी राहत और खुशी मिली कि मैं भूल ही गया था कि पिछले तीन दिनों में मैं खाना-सोना सब भुलाकर काम में जुटा रहा था।

न सिर्फ़ मेरी स्कोलारशिप जारी रही, बल्की मद्रास इंस्टिट्यूट ऑफ़ टैक्नॉलॉजी की परीक्षा भी मैंने बहुत अच्छे अंकों से पास की।

मैं विमान का डिज़ाइन बनाने का अपना लक्ष्य पाने में सफल रहा था और अब विमान उड़ाने के अपने सपने के भी बहुत करीब आ गया था। मैं सोच कर ही उल्लास से भर उठता था कि बचपन में देखे समुद्री पक्षियों की तरह मैं भी जल्द ही आकाश में उड़ान भर पाऊंगा।

समाप्त



Click below to follow us:



You Tube

facebook

BookBox

[www.bookbox.com](http://www.bookbox.com)

© BookBox. All Rights Reserved.